International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(II), October - December, 2022, pp. 309-312

पर्यावरण चुनौतियों के समाधान में ट्रेड यूनियन की भूमिका

डॉ. विजय सिंह*

सार

मनुष्य प्रकृति का अभिन्न अंग है और प्रकृति से ही उसकी आवश्यकताऐं पूरी होती हैं जैसे भोजन, वस्त्र, रहने के लिए आवास। अतः प्रकृति के बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। आज मनुष्य अपने स्वार्थ के कारण प्रकृति को क्षति पहुँचाने लगा है, जिसमें बडे औद्योगिक कारखाने, अत्यधिक खनन ग्रीन हाउस प्रभाव, फसलों में रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग, निर्माण एवं औद्योगिक विकास के नाम पर वनों की अन्धाधुंध कटाई ऐसे कारण है जो पर्यावरण को प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रुप से क्षति पहुँचा रहे हैं। प्रकृति से प्राप्त सभी वस्तुऐं तैयार रुप में नहीं मिलती। इनके लिए श्रम करना आवश्यक है। लेकिन जब व्यक्ति श्रम को ही आजीविका का सहारा बना ले तो एक वर्ग का उदय होता है जिसे श्रमिक कहा जाता है व श्रमिकों का संगठित रुप ट्रेड यूनियन है। पूँजीवादी के अन्तर्गत श्रम संघों का मुख्य उद्देश्य, मजदूरी, काम की शर्तें आदि से सम्बन्धित विषयों पर मालिकों के समक्ष अपनी मांग रखना और औद्योगिक नियन्त्रण तथा लाभ में कुछ हिस्सेदारी प्राप्त करना है। इसके लिए वे हडताल, बहिष्कार, सामूहिक सौदेबाजी और समझौता वार्ताओं का सहारा लेते हैं। एक समाजवादी राज्य में इनका उद्देश्य वर्ग संघर्ष नहीं बल्कि श्रम कल्याण, सामाजिक सुरक्षा एवं पर्यावरण सन्तुलन में अपनी सकारात्मक भूमिका का निर्वाह करना है। आज ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के दौर में पर्यावरण चुनौतियों और अधिक बढ गई हैं। जिनका सामना करने के लिए ट्रेड यूनियनों द्वारा संगठित प्रयास किया जाना अतिआवश्यक है।

शब्दकोशः *ट्रेड, यूनियन, जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, सामाजिक सुरक्षा, औद्यौगिक प्रदूषण, परमाणु विस्फोट।*

प्रस्तावना

भारत में श्रमिक संघ अधिनियम के अनुसार श्रमिक संघ का आशय कर्मचारियों के संगठन के अलावा सेवा नियोजकों के संगठन से है। यह परिभाषा पूर्ण नहीं है, इसलिए नहीं कि यह गैर कर्मचारियों को भी ट्रेड यूनियन बनाने की स्वीकृति प्रदान करती है, बल्कि इसलिए भी कि इस तरह के संगठन के निर्माण के लक्ष्य एवं उद्देश्य भी संदिग्ध है सामान्यतः यह प्रचलित है कि मजदूरों में समन्वय, उनके जीवन स्तर में सुधार, अधिकारों की प्राप्ति व हितों की सुरक्षा हेतु निर्मित संघ ट्रेड यूनियन कहलाते हैं। वेब्स के अनुसार ''ट्रेड यूनियन एक स्थायी संगठन है, जो श्रमिकों द्वारा अपने कार्यकारी जीवन की दशाऐं सुधारने या ठीक करने के आशय से बनाऐ जाते हैं। श्री वी.वी. गिरी के शब्दों में '' ट्रेड यनियन से हमारा अभिप्राय ऐसे संगठन से है, जिनका निमार्ण ऐच्छिक रूप से शांति के द्वारा श्रमिकों के हितों की रक्षा के लिए किया जाता है।'' ट्रेड यूनियनों को शुमेरिनिक ने ऐसे संगठन के रूप में परिभाषित किया है जिसका मुख्य लक्ष्य कर्मचारियों एवं मालिकों के पारस्परिक सम्बन्धों को नियमित करना है।

* प्राचार्य, कला भारती गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, नदबई, भरतपुर, राजस्थान।

पूंजीवाद के अन्तर्गत श्रमिक संघो का प्रथम उद्देश्य मजदूरी काम की शर्तें आदि से सम्बन्धित विषयों पर मालिकों के समक्ष अपनी मांग रखना और उद्योग के नियंत्रण तथा लाभ में कुछ हिस्सेदारी प्राप्त करना है इसके लिए वे हडताल, बहिष्कार, सामूहिक सौदेबाजी और समझौता वार्ताओं का सहारा लेते हैं। एक समाजवादी राज्य में इनका उद्देश्य वर्ग संघर्ष नहीं बल्कि कर्मचारियों की उत्पादकता बढाना एवं श्रम कल्याण और सामाजिक सुरक्षा से सम्बन्धित विषयों पर विचार विमर्श में श्रमिकों का प्रतिनिधित्व करना होता है।

श्रमिक संघ या ट्रेड यूनियन सम्बन्धित क्षेत्रों के श्रमिकों के द्वारा गठित संगठन है जो अपने सदस्यों के सामान्य हितो के लिए काम करता है। वे वेतन की निष्पक्षता काम के अच्छे माहौल काम के घण्टे और लाभ जैसे मुद्दों पर कर्मचारियों की मदद करते है। वे श्रमिकों के एक समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं और प्रबन्धन तथा श्रमिकों के बीच एक कडी का कार्य करते हैं। ट्रेड यूनियन सामूहिक कार्यवाही के मध्यम से अपने हितो की रक्षा और बढावा देने के लिए गठित श्रमिकों का एक संगठन है।

ट्रेड यूनियन के कार्य

पारस्परिक तौर पर ट्रेड यूनियनों का सुरक्षात्मक चरित्र रहा है। इन्होने अपने सदस्यों के तात्कालिक आर्थिक हितों की सुरक्षा के कार्य किये है। इनकी गतिविधियां मुख्यतया कार्यकर्ताओं के आर्थिक स्तर को बनाये रखने, पारिश्रमिक में वृद्धि करने व कार्य की शर्तों को नियन्त्रित करने से संबंधित रही है। आधुनिक मजदूर संघ इन फौरी मांगों से संतुष्ट नहीं हैं। ये संगठन अधिक जटिल है, वर्तमान आर्थिक नीतियों, उदारणकरण, निजीकरण एवं भूखण्डलीकरण से मजदूर वर्ग के सम्मुख उत्पन्न चुनौतियों ने इनकी जिम्मेदरी को व्यापक बनाया है। ट्रेड यूनियनों के कल्याणकारी कार्य उनके व्यापक सामाजिक उत्तरदायित्व का एक हिस्सा है। कल्याणकारी गतिविधियों के खेल कार्यक्रम, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पुस्तकालय, सामान्य षिक्षा के लिए सुविधाऐं व्यावसायिक शिक्षा और पर्यावरण सन्तुलन जैसे कार्यक्रमों को सम्मलित किया जाता है। ट्रेड यूनियन का अंतिम उद्देश्य सामाजिक आर्थिक समस्याओं एवं आधुनिक समय के पर्यावरण जैसी समस्याओं का समाधान करना है। जिसमें न केवल ट्रेड यूनियन या मजदूर हित ही नहीं बल्कि समाज के सभी सदस्य उच्च जीवन जी सकें।

ट्रेड यूनियनों का पर्यावरण शिक्षा से जुडने का कारण

- इन्होनें व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से औद्यौगिक क्षेत्र में बढती पर्यावरण जागरूक को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण सुरक्षा के लिए कदम उठाये है।
- श्रमिकों की सुरक्षा पर्यावरण के साथ निकटता से जुडी हुई है।
- विभिन्न क्षेत्रों के श्रमिकों की मृत्यु का कारण बीमारी नहीं वल्कि कार्यस्थल जैसे चायबागान, खादानों, ईंट भट्टो, पत्थर कटाई केन्द्रों में पर्यावरण मानकों की कमी है इनकी मौतों का मूल कारण पर्यावरण प्रदूषण है।
- पर्यावरण फैलाने वाले उद्योगों को बन्द करने का सुप्रीम कोर्ट का फैसला एक सकारात्मक संकेत है। लेकिन ट्रेड यूनियनों ने महसूस किया कि अगर पर्यावरण सक्रियता के कारण सब कुछ बन्द हो जाता है तो हमारे पास स्वच्छ वातावरण तो होगा या नहीं परन्तु निश्चित रूप से बडे पैमाने पर बेरोजगारी होगी।
- औद्योगिक प्रदूषण पर अंकुश लगाया जाना चाहिऐ लेकिन उद्योगों को बन्द किया जाना तो विकास को अवरूद्व करना है।
- यह पर्यावरण प्रदूशण जन सामान्य के लिए कष्ट का कारण बने तो इसका विरोध करने के लिए ट्रेड यूनियनों बाध्य है। ट्रेड यूनियनों और सरकार के सामने आज यह चुनौती है कि लोगों को भूखा रखे बिना प्रदूषण पर अंकुष लगाने के तरीके खोजे जायें।
- सरकार या गैर सरकारी संगठन चाहे कितनी भी कोशिश करें, औद्योगिक प्रदूषण तब तक नियंत्रित नहीं हो सकता जब तक ट्रेड यूनियनों इनको सहयोग नहीं देगी।

- सरकारी स्तर पर श्रमिकों को पर्यावरण के बारे में शिक्षित नहीं किया जा रहा है। यदि पर्यावरण सुधार के कुछ प्रयास किये भी जाते है तों इसमें सरकारी मशीनरी ही कार्यरत है। स्थानीय लोगों और श्रमिकों को इसमें शामिल नहीं किया जाता है।
- सरकारी एजेन्सीयों श्रम संगठनों को दोष देती है कि ये पर्यावरण कार्यों में सहयोग नहीं देते मगर यह नाराजगी गलत फहमी को जन्म देती है। जबकि श्रम संगठनों का मानना है कि औद्योगिक प्रदूषण पर अंकुश लगाया जाना चाहिऐ लेकिन उद्योगों को बन्द करके नहीं।

पर्यावरण से जुडी है ''श्रमिकों की सुरक्षा''

पर्यावरण के आधार पर औद्योगिक बन्द होने को बढता जोखिम भारत में कई ट्रेड यूनियनों को पर्यावरण संबंधी चिंताओं के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए प्रेरित कर रहा है। भ्ण्डप्े (हिन्द मजदूर सभा) भारत की बडी ट्रेड यूनियनों में अपना स्थान रखती है। उन श्रम निकायों की जो पर्यावरणीय चुनौतियों पर प्रतिक्रिया कर रहे है कोयला, इस्पात, वृक्षारोपण, तम्बाकू, कपडा, रेल्वे और नागरिक उड्डयन जैसे कई औद्योगिक क्षेत्र जहॉ हिन्द मजदूर संघ की प्रमुख उपस्थिति है, इसके महत्वपूर्ण पर्यावरणीय प्रभाव है। हिन्द मजदूर संघ की पर्यावरण प्रतिक्रियाओं में एक पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम शुरू करना पश्चिम बंगाल के औद्योगिक प्रदूषण पर अध्ययन और पर्यावरण को शामिल करने के लिए अपने अनुसंधान और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का पुनर्विन्यास शामिल है।

प्रदूषण फैलाने वाली इकाइयों को बन्द करने या पुनःस्थपित करने के संबंध में ट्रेड यूनियन नेताओं का तर्क है कि स्थानान्तरण और उद्योग बन्दी से उद्योगपतियों को लाभ होगा तथा औद्योगिक इकाईयों के बन्द होने से पर्यावरण को अनिवार्य रूप से लाभ नहीं होता, सीपीआई (भापर्न्सवादी) नेता विलव दास गुप्ता के अनुसार पर्यावरण की दृष्टि से हमें दो प्रकार की सीमाओं के बारे में बात करनी चाहिऐ बाहरी सीमा और आंतरिक सीमा।

बाहरी सीमा से आशय–परमाणु विस्फोट और ओजोन परत जैसे मुद्दे हैं दूसरी ओर आंतरिक सीमा एक बिन्दु है जहॉ चिन्ता का तात्कालिक कारण मानव जाति के अस्तित्व के लिए खतरा नहीं बल्कि विकास की मॉगों से संबंधित है। जब जंगलों को खतरा हो या बडी परियोजनाओं का निर्माण करना हो तो यहॉ के लोगों को पलायन को मजबूर होना पडता है।

ये पलायन किये हुए लोग श्रम बल के रूप में कार्य करते है जिससे उद्योगपतियों के लिए उनका आसानी से शोषण करते है। महत्वपूर्ण बात यह कि पर्यावरण विदो को यह समझना चाहिए कि जब तक गरीबी उन्नूलन के लिए कुछ नहीं किया जाता या श्रमिक वर्ग को उसके अधिकार नहीं दिये जाते तब तक उन्हें विश्वास दिलाना मुश्किल होगा कि पर्यावरण क्षरण उनके जीवन को प्रभावित करेगा।

टॉप–डाऊन दृष्टि कौण ने अब तक काम नहीं किया और भविष्य मे काम नहीं करेगा। आज पर्यावरण की बात वे लोग कर रहे हैं जो कहीं ओर से आजीविका कमाते हैं और पर्यावरण संरक्षण को एक सामाजिक सेवा के रूप में अपनाते हैं। ये समूह सर्वोत्तम इरादे के साथ वंछित परिवर्तन नहीं ला सकते, जब तक कि उन्हें उन लोगों द्वारा समर्थित और सहायता नहीं दी जाती है। जो प्रभावित होने जा रहे हैं।

ट्रेड यूनियनों का मानना है कि अगर श्रमिकों को वैकल्पिक आजीविका के साधन उपलब्ध कराऐ जाये तो वे कारखानों को स्थानान्तरित करने या बन्द करने की अनुमति दे सकते हैं ट्रेड यूनियनों का मानना है कि आज पर्यावरण के मुद्दों को उठाने वाले अधिकांश वे लोग हैं जो किसी कारखाने के बन्द से प्रभावित नहीं होने वाले।

निष्कर्ष

श्रम मानव जीवन एवं निर्माण कार्य हेतु अनिवार्य है, पर्यावरण संरक्षण के लिए भी सही दिशा में किया गया श्रम ही श्रेष्ठ है। जब श्रम बल संगठित रूप में होता है तो इसे ट्रेड यूनियन कहते हैं। आज ट्रेड यूनियनें न केवल स्वहित के लिए कार्य कर रही हैं बल्कि सामाजिक हित और पर्यावरण संरक्षण के लिए ही प्रयासरत हैं।

बडे सयन्त्र, विधुत परियोजना बडे वाधों के निर्माण से पूर्ण पर्यावरण क्षरण से निपटने के लिए योजनाऐं बनाई जाय और उस आधार पर ही इन सयन्त्रों का विकास है तो पर्यावरण खतरे से बचा जा सके। साथ ही साथ पर्यावरण से जुडे सभी लोग एक साथ काम करना सीखें और अपने विरोधी रवैये को छोड दे तो ये सकारात्मक प्रमाण होगा। गैर सरकारी संगठनों और ट्रेड यूनियनों को मिलकर काम शुरू करना चाहिए ताकि आपसी अविश्वास दूर हो। ट्रेड यूनियन और पर्यावरण कार्यकर्ता स्वभाविक सहयोगी है। यदि हम पर्यावरण बचाना चाहते हैं तो हमें उन लोगों को साथ लेना होगा जो बदलाव ला सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ट्रेड यूनियन एक्ट 1926
2. सिडनी एण्ड बिट्रिश वेव : हिस्ट्री ऑफ ट्रेड यूनियनिज्म, 1920, पृष्ठ सं. 1
3. गिरी, वी.वी. : लेवर प्रोबलम इन इण्डिया इन्डस्ट्रीज (ऐशिया पब्लिशिंग हाउस बॉम्वे 1975) पृष्ठ सं. 1
4. सिंह, रघुराज : लेवर इकॉनोमिक, हिन्दी एडीशन आगरा 1974 पृष्ठ सं. 375
5. विप्लव दास गुप्ता : सी.पी.आई. (एम) नेता।

सहायक ग्रन्थ

6. सेन, सुकोमल : भारत का मजदूर आन्दोलन (के.पी.बागची एण्ड कम्पनी कलकत्ता 1986)
7. साव्वेंको.पी. : श्रम क्या है ? (प्रगति प्रकाशन मॉस्को 1987)
8. उत्किन एदुआर्द : ट्रेड यूनियन क्या है। (प्रगति प्रकाशन मॉस्को 1988)
9. लोक लहरः सी.पी.आई.(एम.) का साप्ताहिक मुख पत्र नई दिल्ली

❖◆❖